मूल्य (Value) —

तनाव, अराजकता, हिंसा व अशान्ति ने इस 21वीं शताब्दी निरन्तर शिक्षित हो रही आवाम को दी जाने वाली शिक्षा या तालीम पर निश्चय ही एक गंभीर प्रश्न चिह्न लगा दिया है। शिक्षा में संज्ञानात्मक विकास को अधिक तवज्जो प्रदान किया जा रहा है। किन्तु मानव एवं समाज के लिए सबसे अधिक वांछनीय भावात्मक विकास की उपेक्षा की जा रही है। ऐसे में सामाजिक व सांस्कृतिक अन्तर्विरोधों, आपसी द्वन्द्व व अन्य विघ्नकारी प्रवृत्तियों के रूप में व्याप्त प्रमुख चुनौतियों का सामना करने हेतु एक मूल्यपरक शिक्षा अनिवार्य है।

प्रत्येक समाज एवं देश ने विद्यार्थियों के सर्वोत्तम और सर्वोत्कृष्ट के लिए मूल्यपरक पाठ्यक्रम को नियोजित किया हुआ है। जहां प्रत्येक विषय के अधिगम के माध्यम से कुछ अन्तर्निहित मूल्यों का विकास करने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा के आधारभूत स्तम्भों में से एक शिक्षक का यह कर्तव्य माना जाता है कि वह पाठ्य पुस्तकों में दिए गए मूल्यों का महत्व समझे, उन्हें अपने जीवनचर्या व व्यवहार का एक अभिन्न हिस्सा बनाए, फिर विद्यार्थियों के दैनिक व्यवहार तथा जीवन में समाविष्ट करने का प्रयास करे।

शिक्षक शिक्षा, विद्यार्थी और अधिगम प्रक्रिया को किस प्रकार मूल्यपरक बनाया

Scanned with CamScanner

जाए कि प्रत्येक अधिगम के माध्यम से विद्यार्थी में अन्तर्भूत मूल्यों का भी विकास किया जा सके तथा विद्यार्थियों के दैनिक व्यवहारों एवं आचरणों को मूल्यों के द्वारा नियन्त्रित व निर्देशित किया जा सके। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से किस प्रकार मूल्यों की शिक्षा ~~तथा इनका निर्मा~~ दिया जा सकता है।

मौजूदा पाठ्यक्रम मे शामिल मूल्य = प्रत्येक कक्षा के लिए एक निर्धारित पाठ्यक्रम होता है और पाठ्यक्रम में निश्चित विषयो, पाठ्यक्रियाओ एवं सह पाठ्यचारी क्रियाओ का विवरण रहता है। प्रत्येक विषय के शिक्षण तथा पाठ्यचारी एवं गतिविधियो या क्रिया कलापो मे प्रतिभाग व सहभागीता के माध्यम से विद्यार्थियो में अधिगम के साथ मूल्यो का विकास किया जा सकता है। इनमे से दो प्रमुख है-

(i) प्रार्थना सभा = सम्भवत: प्रत्येक शिक्षण संस्थान का कार्य प्रारम्भ प्रार्थना के माध्यम से होता है। प्रर्थना स्थल पर शिक्षक एवं विद्यार्थी की उपस्थिति मे मातृभाषा में प्रार्थनाओ का आयोजन एवं शांत पूर्ण वातावरण मे किया जाता है। यहा पर प्रार्थना के अतिरिक्त अन्य क्रियाए जैसे कहानी वाचन, नैतिक उपदेश, समसामयिक सन्दर्भो में चर्चा आदि की जाती है। इनके माध्यम से विद्यार्थियो मे अपेक्षित मूल्यो का विकास किया जा सकता है।

(ii) विभिन्न आधारभूत विषयो के शिक्षण द्वारा — प्रत्येक कक्षा के पाठ्यक्रम में कुछ निश्चित आधारभूत विषय रहते है और प्रत्येक विषय के

Scanned with CamScanner

शिक्षण व विषयवस्तु का अपना महत्व व उपयोगिता होती है। आधारभूत विषयो (सामाजिक अध्ययन, विज्ञान, साहित्य भाषा आदि) में शामिल प्रत्येक विषय के शिक्षण के माध्यम से अधिगम के साथ-साथ मूल्यों की भी शिक्षा जा सकती है। इन विषयो के शिक्षण अधिगम द्वारा निम्न मूल्यो का विकास किया जा सकता है जैसे - सहयोग, पारस्परिक सम्मान, ईमानदारी, एकता, अनुशासन, संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रीयता, अंतर्राष्ट्रीयता, -साम, स्वतन्त्रता, भाईचारा, समानता, सहयोग, सद्भावना आदि।

Scanned with CamScanner

अधिगम के लिए आकलन (Assessment for Learning) :— अध्यापन कार्य के पहले या सीखने-सिखाने के दौरान ही आकलन चलता है जिसे अधिगम के लिए आकलन कहते है। सीखने के लिए जिन चीजो की आवश्कता होती है वह अधिगम के लिए आकलन कहते है।

अधिगम के लिए आकलन को इन बिन्दुओ से समझ सकते है।

1 ⇒ बालको के शिक्षण मे किसी प्रकार की समस्या होने से पहले उसे आकलित करके उसके अनुरूप अधिगम कराना।

2 ⇒ यह आकलन निदानात्मक होता है।

3 ⇒ अधिगम के लिए आकलन रचनात्मक भी होता है।

4 ⇒ यह एक शिक्षण वर्ष मे चार होते है।

Scanned with CamScanner

5 ⇒ अवलोकन, गृहकार्य, क्लास टेस्ट, दत्त कार्य आदि से इस प्रकार का आकलन किया जाता है।

6 ⇒ इसके द्वारा विद्यार्थियों का तुलनात्मक आकलन नहीं होता है बल्कि उनकी व्यक्तिगत कमियों और गुणों का आकलन होता है।

7 ⇒ बालक की योग्यता का स्तर व रुचि को पहचान करना।

8 ⇒ शिक्षार्थियों की क्षमताओं की पहचान करना।

9 ⇒ बालक की आवश्यकता के अनुसार विषय वस्तु का चयन

10 ⇒ शिक्षार्थी के अधिगम हेतु उचित शिक्षण विधि का चयन करना।

11 ⇒ बालक को पूर्व ज्ञान से जोड़कर प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा अधिगम कराना।

12 ⇒ निरन्तर अभ्यास

Scanned with CamScanner

अधिगम का आकलन (Assessment of Learning)

सीखने के बाद किया गया आकलन अर्थात बच्चो की उपलब्धि और कार्यक्षमता की पहचान करने के लिए किया गया आकलन, अधिगम का आकलन कहलाता है।

अधिगम का आकलन को निम्नलिखित बिन्दुओ

Scanned with CamScanner

से समझ सकते हैं —

1 ⇒ पूरे शिक्षण सत्र का अन्त में किया गया आकलन आधिगम का आकलन होता है।

2 ⇒ इस प्रकार के आकलन का उद्देश्य आधिगम प्राप्ति और शैक्षिक उपलब्धि का आकलन होता है।

3 ⇒ यह संकलनात्मक आकलन होता है जो सम्पूर्ण शिक्षण सत्र की समाप्ति के बाद किया जाता है।

4 ⇒ इस आकलन के द्वारा विद्यार्थी की आधिगम क्षमता का आकलन किया जाता है।

5 ⇒ यह आकलन शिक्षण सत्र में दो बार किया जाता है।

6 ⇒ इसमें वार्षिक परीक्षा के माध्यम से छात्र द्वारा किये गए आधिगम का आकलन किया जाता है।

7 ⇒ बालक द्वारा सीखे गये कार्यों में हुई कमियों को जानने हेतु मूल्यांकन

8 ⇒ शिक्षण आधिगम में हुयी त्रुटियों में सुधार हेतु आकलन किया जाता है।

9 ⇒ विषय वस्तु में सुधार हेतु

10 ⇒ भविष्य हेतु नीति निर्माण

Scanned with CamScanner